International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 06, June 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बालक अभिभावक संबंध पर सुरक्षा और असुरक्षा का प्रभावः एक अध्ययन

प्रो. लक्ष्मेश्वर ठाकुर अवकाशप्राप्त
एसोसियेट प्रोफेसर (मनोविज्ञान)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर

ज्योति सिसोदिया
शोध छात्रा (मनोविज्ञान)
सामाजिक विज्ञान संकाय
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर

सार

प्राणी अंतिम क्षण तक अपने वातावरण के साथ अभियोजनानाथ सतत प्रयास करता है। अनेक युगों के चिंतन मनन एवं अनुभव के परिणामस्वरुप असमायोजित व्यवहार की आधुनिक व्याख्या स्थापित हो सकी है। व्यक्ति के अंदर मनोवैज्ञानिक शील गुणों का गत्यात्मक संगठन है। वातावरण तथा पारिवारिक परिवेश बच्चों को सदैव ही एक जैसा अवसर नहीं प्रदान कर सकते हैं। एक सामान्य बच्चा अपना सामान्य विकास उसी स्थिति में कर सकता है, जब उसे स्नेह तथा सहानुभूति आधारित पर्यावरण मिलता रहे। समुचित वातावरण के अभाव में उसके भीतर प्रतिक्षण हीनता की भावना विकसित होती है तथा एक प्रकार की दुश्चिन्ता विकसित होने लगती है। सुरक्षा और असुरक्षा का बालक अभिभावक संबंध पर प्रभाव पड़ता है। सुरक्षित व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त करता है वहीं असुरक्षित व्यक्ति तिरस्कार की भावना से ग्रसित रहता है, जिसके कारण हमेशा उसमें खतरे की अनुभूति होती रहती है। अधिकांश जनसंख्या सुरक्षा–असुरक्षा के अति बिंदुओं के बीच विभिन्न श्रेणियों में पड़ती है।

भूमिका

बाल्यावस्था से प्रारंभ होकर जीवन के अंतिम क्षण तक प्राणी अपने वातावरण के साथ अभियोजनानाथ सतत प्रयास करता है। मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्धारण अभियोजन की सफलता एवं असफलता पर ही निर्भर है। यदि व्यक्ति को समुचित अभियोजन में अपेक्षित सफलता नहीं मिलती है तो उसमें नाना प्रकार के असामान्य व्यवहार उत्पन्न होने लगते हैं, जिससे व्यक्ति समाज की दृष्टि में निश्चित ही असामान्य हो जाता है, क्योंकि असामान्य व्यवहार सामान्य व्यवहार का ही अतिरंजीत रूप होता है।

असमायोजित व्यवहार के कारणों को समझने के लिए इसके संक्षिप्त इतिहास का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि अनेक युगों के चिंतन मनन एवं अनुभव के परिणामस्वरुप इसकी आधुनिक व्याख्या स्थापित हो सकी है।

इस दिशा में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रारंभ है उस समय से माना जाता है जब चिकित्सकों ने यह अनुभव किया कि दैहिक आधार पर किए जाने वाले उपचार से मात्र 10 प्रतिशत रोगी ही लाभान्वित हो पाते हैं। शेष 90 प्रतिशत रोगियों को इस प्रकार की उपचार विधि से कोई उल्लेखनीय लाभ होता नहीं दिखाई पड़ता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 06, June 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आधुनिक मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व के गत्यात्मक पहलुओं पर आधारित माना जाता है। अर्थात व्यक्ति के अंदर मनोवैज्ञानिक शील गुणों का गत्यात्मक संगठन है। इन मनोवैज्ञानिक शील गुणों का संगठन तथा विकास वातावरण में होता है। अतः, इस अर्थ में व्यक्तित्व प्राणी बनाम वातावरण न होकर वातावरण में प्राणी माना जाता है। व्यक्ति वातावरण में क्रिया–प्रतिक्रिया करता है तथा इन्हीं के आधार पर उनके व्यक्तित्व के मनोवैज्ञानिक शील गुणों का विकास होता है।

वातावरण तथा पारिवारिक परिवेश बच्चों को सदैव ही एक जैसा अवसर नहीं प्रदान कर सकते हैं। इसके अनेक कारण हैं। प्रमुख कारणों में पारिवारिक वातावरण, शिक्षा के अवसर, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, सामाजिक मान्यताएँ एवं व्यक्तित्व के अनेकों कारक हैं। इन सभी कारकों का व्यक्तित्व पर समान रूप से प्रभाव पड़ता है।

एक सामान्य बच्चा अपना सामान्य विकास उसी स्थिति में कर सकता है, जब उसे स्नेह तथा सहानुभूति आधारित पर्यावरण मिलता रहे। समुचित वातावरण के अभाव में उसके भीतर प्रतिक्षण हीनता की भावना विकसित होती है तथा एक प्रकार की दुश्चिन्ता विकसित होने लगती है। जो समाज उसकी मूलभूत आवश्यकताओं के तृप्ति भी सहज ढंग से नहीं कर पाता, उस समाज में पलने वाले व्यक्ति का ना तो सामान्य व्यक्तित्व ही बन पाता है और ना उसके व्यवहार ही सामान्य रह पाते हैं। उसके अंदर एक विद्वेश की भावना पनपती है जो आगे चलकर पूरे समाज से प्रतिशोध की भावना के रूप में विकसित होती है। ऐसा व्यक्ति ही आगे चलकर समाज विरोधी आचरण करने लगता है।

प्रस्तुत अध्ययन में सुरक्षा और असुरक्षा का बालक अभिभावक संबंध पर किस रूप में प्रभाव पड़ता है, इसे देखने का प्रयास किया गया है। सुरक्षा और असुरक्षा के संबंध में मैस्लो (1952) का मानना है कि सुरक्षित व्यक्ति वह है जो अपने जीवन में आत्म सम्मान की भावना से ओत–प्रोत होता है। वह किसी भी कार्य के प्रति पूरे विश्वास के साथ उत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से तत्पर रहता है। वह जीवन में सफलता प्राप्त करता है। दूसरी ओर एक असुरक्षित व्यक्ति तिरस्कार की भावना से ग्रसित रहता है, जिसके कारण हमेशा उसमें खतरे की अनुभूति होती रहती है। उसमें हीनता की भावना निहित हो जाती है और वह आजीवन अपने को हेय मानता रहता है। ऐसे व्यक्ति में आत्मसम्मान की भावना विकसित नहीं हो पाती है तथा अपने को किसी उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य के लिए सक्षम नहीं मानता है। और सुरक्षित व्यक्ति समाज से कटा रहता है। ना वह सभी लोगों पर विश्वास करता है और ना सभी लोग उन पर विश्वास कर सकते हैं।

प्राक्कल्पनाः इस पृष्ठभूमि में यह प्राक्कल्पना की जाती है कि "सुरक्षित व्यक्तित्व के बालक–अभिभावक में असुरक्षित व्यक्तित्व के बालक अभिभावक की अपेक्षा अनुकूल संबंध पायी जाएगी।"

क्षेत्रः मुजफ्फरपुर शहर अंतर्गत विभिन्न इंटर स्तरीय महाविद्यालय में अध्यनरत छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया।

प्रतिदर्शः मुजफ्फरपुर शहर अंतर्गत इंटर स्तरीय महाविद्यालय में अध्यनरत छात्र–छात्राओं में से 300 छात्र एवं छात्राओं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया।

उपकरण एवं मापनीः व्यक्तित्व के सुरक्षा–असुरक्षा आयाम को मापने के लिए मैसलो (1952) के सुरक्षा–असुरक्षा मापनी के हिंदी अनुवाद सिंह (1965) का चालन किया गया।

परिणामः सुरक्षा–असुरक्षा एवं स्वीकारी पितृत्व तथा अभिभावक–बालक संबंधः सुरक्षा–असुरक्षा एवं

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 06, June 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्वीकारी पितृत्व तथा अभिभावक–बालक संबंध के संदर्भ में यह प्राक्कल्पना किया गया था कि सुरक्षित व्यक्तित्व के बालक–अभिभावक में असुरक्षित व्यक्तित्व के बालक–अभिभावक की अपेक्षा अनुकूल संबंध पाया जाएगा। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर अध्ययन किया गया। अभिभावक–बालक संबंध को देखने के लिए सर्वप्रथम स्वीकारी पितृत्व चर के आधार पर देखने का प्रयास किया गया। यह मापनी छः भागों में बँटा हुआ है– स्वीकारी पितृत्व, स्वीकारी मातृत्व, एकाग्री पितृत्व, एकाग्री मातृत्व, परिहारी पितृत्व तथा परिहारी मातृत्व। अभिभावक–बालक संबंध को इन छः भागों के आधार पर समग्र रूप में 'टी' अनुपात परीक्षण के आधार पर मापा जाएगा। दोनों ही समूहों सुरक्षा–असुरक्षा तथा क्रमषः स्वानुभूत अभिभावकत्व के अलग–अलग खंडों के आधार पर अभिभावक–बालक के संबंध में प्राप्त परिणामों का उल्लेख किया गया।

सारणी संख्या–1

स्वीकारी पितृत्व एवं सुरक्षा–असुरक्षा प्राप्तांकों के मध्यमान का अन्तर

समूह	संख्या	मध्यमान	विचलन	टी अनुपात	डी.एफ.	सार्थकता स्तर
सुरक्षित	73	14.02	8.5	2.82	136	0.01
असुरक्षित	65	17.52	9.39			

सारणी संख्या–एक में उल्लेख के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अभिभावक–बालक संबंध के निर्धारण में सुरक्षा–असुरक्षा चर से प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर क्रमषः मध्यमान 14.02 तथा 17.52 पाया गया है। तथा प्रमाणिक विचलन 8.5 तथा 9.39 पाया गया है। दोनों ही समूह से प्राप्त टी–अनुपात 2.82 पाया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि दोनों ही समूहों में सार्थक अंतर पाया गया है क्योंकि सार्थकता स्तर 0.01 पर सत्यापित हो रहा है। स्वीकारी पितृत्व तथा सुरक्षा–असुरक्षा के बीच स्पष्ट संबंध पाया गया है जो अभिभावक–बालक संबंध को सत्यापित करता है।

सारणी संख्या–2

स्वीकारी मातृत्व एवं सुरक्षा–असुरक्षा प्राप्तांकों का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	संख्या	मध्यमान	विचलन	टी अनुपात	डी.एफ.	सार्थकता स्तर
सुरक्षित	73	14.8	9.25	2.68	136	0.01
असुरक्षित	65	18.34	11.38			

सारणी संख्या–दो से यह स्पष्ट होता है कि स्वीकारी मातृत्व एवं सुरक्षा–असुरक्षा का अभिभावक–बालक संबंध पर प्रभाव पड़ता है क्योंकि सुरक्षित समूह का अभिभावक–बालक प्राप्तांकों का मध्यमान 14.8 तथा प्रमाणिक विचलन 9.25 पाया गया है जबकि असुरक्षित अभिभावक–बालक संबंध प्राप्तांकों का मध्यमान 18.34 तथा प्रमाणिक विचलन 11.38 पाया गया है। दोनों ही समूहों का टी–अनुपात 2.68 पाया गया है जिससे यह स्पष्ट होता है कि अभिभावक–बालक संबंध पर स्वीकारी मातृत्व का प्रभाव पड़ता है। जिससे सुरक्षा–असुरक्षा चर के आधार पर प्राप्त परिणाम सत्यापित होता है।

सारणी संख्या–3

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 06, June 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

एकाग्री पितृत्व एवं सुरक्षा–असुरक्षा प्राप्तांकों का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	संख्या	मध्यमान	विचलन	टी अनुपात	डी.एफ.	सार्थकता स्तर
सुरक्षित	73	13.09	9.87	2.75	136	0.01
असुरक्षित	65	17.21	11.32			

सारणी संख्या–तीन में यह उल्लेख किया गया है कि एकाग्री पितृत्व के सुरक्षित अभिभावक–बालक की अपेक्षा असुरक्षित अभिभावक–बालक में अनुकूल संबंध पाया जाएगा। परिणाम भी अनुकूल पाया गया है। क्योंकि सुरक्षित समूह से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 13.09 तथा प्रमाणिक विचलन 9.87 पाया गया है। जबकि असुरक्षित समूह के प्राप्त प्राप्ताकों का मध्यमान 17.21 तथा प्रमाणिक विचलन 11.32 पाया गया है। दोनों ही समूहों के आधार पर प्राप्त टी–अनुपात 2.75 पाया गया है जिससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों ही समूहों के बीच सार्थक संबंध पाया गया है। यह 0.01 स्तर पर सार्थक प्रमाणित होता है। अभिभावक–बालक संबंध भी इस आधार पर सत्यापित होता है।

सारणी संख्या–4

एकाग्री मातृत्व एवं सुरक्षा–असुरक्षा प्राप्तांकों का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	संख्या	मध्यमान	विचलन	टी अनुपात	डी.एफ.	सार्थकता स्तर
सुरक्षित	73	14.02	8.05	2.83	136	0.01
असुरक्षित	65	17.52	9.39			

सारणी संख्या–चार में वर्णित सामग्री मातृत्व एवं सुरक्षा–असुरक्षा तथा अभिभावक–बालक संबंध को देखा गया है। प्राप्त परिणामों के आधार पर दोनों ही समूहों के बीच पाए गए संबंध का उल्लेख किया गया है। सुरक्षित एवं एकाग्री मातृत्व से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 14.02 तथा प्रमाणिक विचलन 8.05 पाया गया है। जबकि असुरक्षित एवं एकाग्री मातृत्व से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 17.52 तथा प्रमाणिक विचलन 9.39 पाया गया है। दोनों ही समूहों से प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर टी–अनुपात 2.83 पाया गया है जो 0.01 स्तर पर सार्थक संबंध को दर्शाता है। अभिभावक–बालक संबंध पर इस चर का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। परिणाम परिकल्पना को सत्यापित करता है।

सारणी संख्या–5

परिहारी पितृत्व एवं सुरक्षा–असुरक्षा प्राप्तांकों का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	संख्या	मध्यमान	विचलन	टी अनुपात	डी.एफ.	सार्थकता स्तर
सुरक्षित	73	16.92	8.21	0.96	136	अप्रमाणित
असुरक्षित	65	18.21	9.39			

सारणी संख्या–पाँच में उल्लिखित परिहारी पितृत्व एवं सुरक्षा–असुरक्षा के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया और यह देखने का प्रयास किया गया कि अभिभावक–बालक संबंध पर प्रभाव पड़ता है या नहीं। दोनों ही समूहों से प्राप्त परिणामों की व्याख्या की गई। सुरक्षित समूह से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 16.92 तथा प्रमाणिक विचलन 8.21 पाया गया है, जबकि सुरक्षित समूह से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 18.21 तथा प्रमाणिक विचलन 9.39 पाया

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 06, June 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गया है। दोनों ही समूहों से प्राप्त टी–अनुपात 0.96 पाया गया है जो 136 डी.एफ. के लिए किसी भी स्तर पर सत्यापित नहीं हो रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि परिहारी पितृत्व के अभिभावकों में बालक के साथ अनुकूल संबंध सत्यापित नहीं होता है। परिहारी पितृत्व के अंतर्गत व्यक्तित्व का यह सुरक्षा–असुरक्षा चर के बीच किसी भी तरह से अंतर नहीं पाया जाता है और परिकल्पना भी सत्यापित नहीं हो रही है।

सारणी संख्या–6

परिहारी मातृत्व एवं सुरक्षा–असुरक्षा प्राप्तांकों का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	संख्या	मध्यमान	विचलन	टी अनुपात	डी.एफ.	सार्थकता स्तर
सुरक्षित	73	8.00	8.81	1.00	136	अप्रमाणित
असुरक्षित	65	9.35	10.32			

सारणी संख्या–छह से यह स्पष्ट होता है कि परिहारी मातृत्व एवं सुरक्षित–असुरक्षित अभिभावक–बालक के बीच संबंध का परिणाम इस प्रकार पाया गया है। परिहारी मातृत्व एवं सुरक्षित समूह से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 8.0 तथा प्रमाणिक विचलन 8.81 पाया गया है जबकि परिहारी मातृत्व एवं सुरक्षित समूह से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 9.35 तथा प्रमाणिक विचलन 10.32 पाया गया है। दोनों ही समूहों से प्राप्त टी–अनुपात 1.00 पाया गया है जो 136 डी.एफ. के लिए किसी भी स्तर पर सत्यापित नहीं हो रहा है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि परिहारी मातृत्व के संबंधित अभिभावक–बालक संबंध पर व्यक्तित्व के सुरक्षित–असुरक्षित चर का किसी भी रूप में सार्थक संबंध नहीं पाया गया हैं। दोनों समूहों के बीच किसी भी तरह से अंतर स्पष्ट नहीं हो रहा है। परिहारी मातृत्व के अंतर्गत केंद्रीय प्रवृत्ति के आधार पर किए गए अध्ययनों में भी अंतर नहीं पाया गया है।

इस प्रकार, यह पाया गया है कि माता–पिता के साथ बालक का संबंध बालक के व्यक्तित्व के विकास पर अत्यधिक और दूरगामी प्रभाव डालता है। यहाँ तक कि बालक के व्यक्तित्व का विकास माता–पिता के साथ उसके संबंध के आलोक में ही विकसित होता है।

Reference

1. Garrett, Henry, E. (1961): *General Psychology*. New York, American Book Co.
2. Garettee, H. E. (1955): *Satisfaction in Psychology and Education*, (Fourth Edition) Longman, Green & Co. New York.
3. Guilford, J. P. (1956): *Fundamental Statistics in Psychology and Education*. Third Edition, MC-Graw Hillbook Company. INC, New York.
4. Choudhary, P. (2014): Social Maturity of Adolescents in Relation to Their Gender and Locality: A Comparative Analysis, *Scholarly Research Journal for Humanity Science and English Language*, I(VI).
5. Andersons, H. H. &. Brewer, J. E. (1946): "Effect of Teacher's Dominative and Integrative Contacts on Children's Classroom Behaviour", *Applied Psychology*

Monographs, No, 8.

6. Rai, Dr Dona & Sarita Rai (2019): A Study on Parent-Child Relationship and Their Academic Achievement of Students Studying in Class X, International Journal of Multidisciplinary Educational Research, Vol. 10, Issue 2(5), February 2021.
7. Singh, M. & Kumar, D. (2016): Family Relationship among High School Students in Relation to Their Emotional Intelligence.
8. Tanwar, Dr Dimple Singh (2022): Parent Child Relationship and its Impact on Indian Society, International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS), Vol. 04, Issue 04(II), October-December, 2022, pp.221-224.
9. Thakur Lakshameshwar (2008): 'Parental Attitude Towards Education Questionnaire', B. R. A. Bihar University, Muzaffarpur.